REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

उदारीकरण और लोकतंत्र

प्रा.डॉ. प्रमोद मनोहर बोधाने
इतिहास विभाग प्रमुख ,
महिला महाविद्यालय, गडचिरोली.

उदारीकरण ने गरीबी घटाने, सशक्तीकरण तथा लोकतंत्र हेतू अपणे निहीतार्थो के विषय मे एक जोरदार बहस को जन्म दिया है। नियोजन प्रारंभ होने के बाद से भारतीय नितीनिर्माताओ का ध्येय वह प्राप्त करना रहा जीसे आज 'न्यायसंगत विकास' कहा जाता है, यथा वह विकास जो गरीबी घटाता है व आय के और अधिक समान वितरण हेतू प्रवृत्त करता है तथा लोकतंत्र के साथ चलता है। लोकतंत्र तथा एक और अधिक समतावादी आर्थिक व्यवस्था परस्पर जूडे माने जाते है। राजनितीक अधिकारोकी गारन्टी आर्थिक अधिकारोकी बगेर नही दियी जा सकती है। संविधान ने स्वयं इसे अपने कर्तव्य के रूप मे पहचाना था और एक अधिक न्याय संगत समाज साधीत करणे के लिए आरक्षण हेतू प्रावधान किये थे। आरक्षण का कार्यक्षेत्र गत वर्षो बडाया गया है तथा गरीबो की स्थिती सुधारणे के सात सात उनको अधिक शक्ती प्रदान करणे के लिए भी अनेक कार्यक्रम बनाये गये है।

वर्तमान संसाधनोको अनेक व्यक्त एवं अव्यक्त परीदानो की ओर मोड दिया गया है। इन परिदानोका एक प्रभाव केंद्रीय तथा राज्य सरकारोका बढता बजेट घाटा रहा है। इन घाटोने सार्वजनिक क्षेत्रमे ओर अधिक रोजगार हेतू बहूत थोडी संभवना छोडी है। सार्वजनिक क्षेत्रमे रोजगार बडाना आवश्यक है। कोई व्यक्ती ऐसा दावा नही करता की, उसके सभी अभाव दूर हो गये है, गरीबी घटाने की दिशा मे काफी प्रगती हो गयी थी। संसद ने कमजोर वर्गोसे आए प्रतिनिधीओ की संख्या या मत्रालयोमे अथवा मुख्यमंत्रीयो के बिच भी भागीदारी को यदी देखा जाये तो सशक्तीकरण मे प्रगती भी है। परंतु इस प्रगती की निरंतरता के विषय मे एक बहूत ही यथार्थ पुरक प्रश्न है। गंभिर अवरोध पैदा हूये है। सार्वजनिक क्षेत्रमे जरूरतसे अधिक आदमी सरबराह कीये गये है, जिसने सार्वजनिक निवश तथा भावी विकास व रोजगार को घटाया है। शिक्षा व स्वास्थ्य की उपेक्षा हुई है और लोगोका मेहंगी निजी शिक्षा व स्वास्थ्य पर निर्भर होना पड रहा है। इस समय तेजीसे बढनेकी आवश्यकता ओर एक बेहतर विवरण रचने की बिच एक बहुत यथार्थ परक विवाद है। उदारीकरण वृध्दीदर बढाकर ओर आगे के पुर्नरवितरण हेतू अन्य साधन मुहैया करा सकता है। दुर्भाग्यवश उदारीकरण से और अधिक लाभ उठाने के लिए आधारभूत ढाचे मे ओर मानव पुंजी मे निवेशोकी आवश्यकता है। परंतु फिलहाल ऐसा नही हो रहा है। रोजगार वृध्दी का अभाव निजी क्षेत्र मे आरक्षण

हेतू मॉगोको भी प्रेरीत कर रहा है। यह देख पाना मुश्किल है की, इस प्रकार के आरक्षण को पण्यक्षेत्र पर जादा भरोसे की निती के साथ इस प्रकार जोडा जा सकता है। यदी समाज को समुचित विकास प्रदान करने मे सफल होना है तो उनके सामने गंभिर चुनौतीया तो आयेंगी।

उदारीकरण की वजह से भुमण्डलीकरण विभिन्न राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओ के एकीकरण को बढा रहा ह, कौंकी प्रतिबंधो की समाप्ती माल व पुंजी प्रवाह दोनोके बेहतर प्रवाहो मे परिनत हूई है। उदारीकरण गरीबी घटाने मे मदत कर सकता है। एक अधिक उदार व्यापार निती भारत को श्रम साधीत वस्तुओको निर्यात करने मे मदत कर सकता है, यथा वे वस्तुये जिनके उत्पादन मे काफी श्रमिक लगाये जाते है। इस बात के संकेतका प्रमाण है की, उदारीकरण के बाद से हो रहा है।

श्रम साधीत निर्यातोके विस्तार का निहीतार्थ है रोजगार मे वृध्दी और सवेतन रोजगार की व्यवस्था एक गरीब आदमी को गरीबीसे उबरने के लिए एक सबसे अच्छा रास्ता है। परंतु सर्वोतम परिणामो के लिए रोजगार जो पैदा कीय जाए उचे वेतनोपर हो। वेतन तब उचे होंगे जब कौशल संपन्न नौकरीया पैदा कि जाएगी। परंतु ऐसा रोजगार पाने के लिए उन लोगोको शिक्षित होना होगा। इस समय एक प्रबल आवश्यकता सरकारके लिए यह है की, वह अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराना चाहीऐ। मात्र जन शिक्षा का स्तर गिरता रहा है। और निजी शिक्षा की लागट बढती रही है। इस स्थिती को तात्काल सुधारे जाने की, आवश्यकता है। यदी समाज को उदारीकरण प्रदत्त अवसरोका अधिक से अधिक लाभ उठाने है ओर समुचित विकास लाना है।

भुमण्डलीकरण गरीबी घटाने ओर आय असमानता कम करने के बिच एक संभव संघर्ष समाने लाता है, एक संभव जिसको भारत मे पहिले नकार दिया गया था। भुमण्डलीकरण राज्य की भुमीकामे परिवर्तन करता है, आवश्यकता नही की, वह उसमे कमी की ओर भी प्रवृत्त करे। बजाये इसके राज्य उत्पादन मे सिधेसिधे सामील हो, राज्य को भौतिक व मानविय दोनो पुजी मुहैया करानी पडती है। उसको गरीबो को आर्थिक प्रणाली लाने और उनकी स्थिती सुधारने हेतू कारवाई करनी होती है। इसके अतिरिक्त राज्य को निजी उधम को नियमित करणे के लिए कारवाई करनी होती है। उत्पादन बढाने बजाए राज्य नियामक संस्थाये स्थापीत करता है। यह स्पष्ट नही है की, इसकी मदत से नियामक अभी करनोको राजनितीक हस्तक्षेप और तद नुसार अदक्षता की ओर प्रवृत्त होने से बचाना किसी तरह आसान होगा। उदारिकरण समुचित विकास लाने के लिए राज्य की भुमिकाके बारे मे नये प्रश्न उठाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था आर्थिक उदारीकरण की नितीकी ओर प्रवृत्त किए जा रही है। एक उच्च स्तर वृध्दी दर की आवश्यकता थी जिसके लिए न सिफ उच्च स्तर निवेशोकी पुंजगत वस्तुओके बेहतर निर्यात की भी आवश्यकता थी। निर्यात के बदले औद्योगीकरण की निती जो विकास निती की पुरक है, एक व्यवहार्य विकल्प दिखायी पडता है। ये विकल्प सुरवात मे विकसनशील देशोमे अपनाये थे।

लोकतांत्रिक व्यवस्था मे आय का एक समान वितरण सुनिश्चित होता है । जिसके द्वारा राजनितिक व आर्थिक अधिकार जुडते है। यदापी उदारीकरण के लाभो के बारे मे दावे होते रहे है, सरकारी निवेश के अभाव मे एक पुराने पड चुके आधारभूत ढाचे की ओर अभिमुख किया है जिससे विकास रूका हुआ है। प्रतिबंधोकी समाप्ती नुसार लाभोको पैदा करणे मे असफल रही है। वक्त का तकाजा है की, भुमण्डलीकरण अथवा उदारीकरण प्रदत्त अवसोरोका अधिकसे अधिक लाभ उठाया जाए। राज्य की भुमिका इस संदर्भमे निरनायक है न सिर्फ वर्तमान स्थितीको सुधारणे मे बल्की अदक्षता– उन्मुख चालो को निष्काम करने मे भी। इस प्रकार राज्य उदारीकरण नितीयो का एक सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित कर सकता है और समुचित विकास ला सकता है।

संदर्भग्रंथः–

1. रमेश सिंह – भारतीय अर्थव्यवस्था
2. व्हि एन. खन्ना, लिपाश्री अरोडा भारत की विदेशनिती
3. डॉ. व्ही सी सिन्हा – लोकअर्थशास्त्र
4. अमर्त्य सेन – डिवेलमेण्ट एज फ्रीडम